गरिमावान दादी

अस्तित्व की गाथायें हमने सबकी सुनी, उसपर कुछ तानें भी बुने, लेकिन एक अस्तित्व हमारे संसार में है जिसको सिर्फ और सिर्फ गुणगान के द्वारा जाना जाता है, उसपर ताना नहीं कसा गया। लोगों ने सिर्फ और सिर्फ उसको सराहा, संजोया और दिल में जगह दी। ऐसी गरिमावान दादी को शत् शत् नमन्।

एक बार की घटना है कि एक जिज्ञासु परमात्मा के घर में आता और आकर कहता कि इतना कुछ जो चल रहा है इसकी संरक्षिका कौन है? मैं उनसे मिलने को आतुर हूँ। इस आतुरता और उहापोह की स्थिति में वो सबसे पूछते-पूछते जब उस महान व्यक्तित्व के सामने पहुंचता है तो कहता कि अब मैं मान सकता हूँ कि ब्रह्माकुमारीज़ में हर एक बच्चा इतना अच्छा कैसे है! अभी मुझे लग रहा है कि ये संस्था निश्चित रूप से शिखर पर पहुंचेगी क्योंकि इसको चलाने वाला भी प्रकाश स्तम्भ के समान है। ऐसे वो जिज्ञासु दादी जी की तारीफ करते-करते थक नहीं रहा था। बड़े प्रेरणादायी बोल थे वो दादी जी के, जिनको सुनकर बहुत सारे लोगों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य अर्थ दिया। हमारा बहुत सुंदर सौभाग्य है कि थोड़ा बहुत दादी जी द्वारा सुनाई गई मुरली और उनके प्रेरणादायी बोल हमारे कानों में पड़े। उनसे शुरु से लेकर अभी तक हमने प्रेरणा ही ली है। दादी जी कुमारों के प्रति हमेशा अलग तरह से प्रेरणायें देते थे। वो कहते थे कि ब्राह्मण बनना, परमात्मा को अपना जीवन देना, यह एक महान कर्म है, और अपने अस्तित्व को एक नई ऊँचाई देने का एक साधन है। इसलिए आपने अगर दुनियावी जीवन से निकलकर इस जीवन को अपनाया है तो निश्चित रूप से आप परमात्मा के दिलतख्त पर हैं। इस ज्ञान में सिर्फ ज्ञान को समझ करके चलना, परमात्मा यह ज्ञान सुना रहा है, परमात्मा ही हमको प्रेरणा दे रहा है, परमात्मा ही यज्ञ चला रहा है, परमात्मा का ही ये भंडारा है, स्वयं को ऐसा निमित्त मानना, ऐसा ट्रस्टी मानना अपने आप को बंधनों से मुक्त करना है। कहते हैं कई बार कुमार इस ईश्वरीय जीवन से ऊब जाते हैं, इसका कारण है उन्होंने अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित नहीं किया, अपने आप को ट्रस्टी नहीं माना। तभी वो जाके बाहरी दुनिया का जीवन फिर से जीने लग जाते हैं। ऐसी वास्तविकता से परिचित कराने वाली दादी जी हर समय हम सबके ज़हन में ही हैं। हमारे यज्ञ के बड़े राजयोगी भाई और बहनें जब उनके बारे में कुछ बात करते हैं तो उससे भी कुछ सीखने को मिलता है।

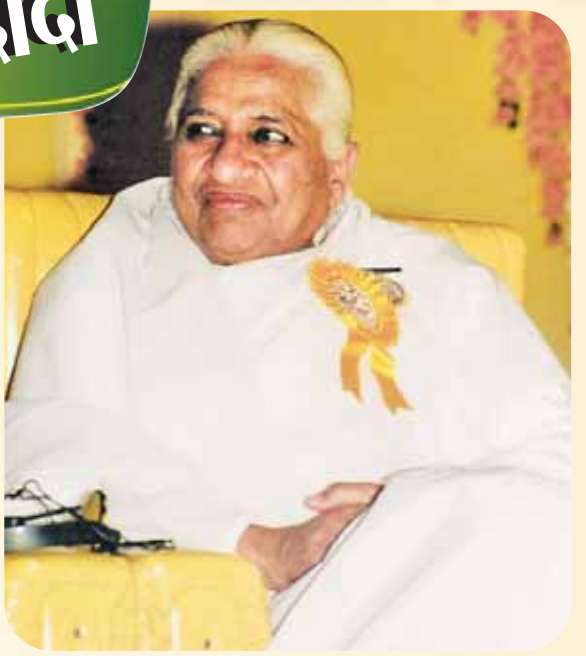

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उनकी निरहंकारिता के चर्चे हर कोई करता। यज्ञ का विस्तार दादी का बेहद का संकल्प था। और उसको मूर्तरूप देने का कार्य भी दादी ने ही किया। हम सभी के छोटे लेकिन अविस्मरणीय अनुभव दादी जी के साथ जुड़े हैं। हम जब भी कभी पुस्तकों में ऐसा कुछ पढ़ते या सुनते हैं, तो लगता है कि एक जीवंत फरिश्ते का सटीक उदाहरण हमारी दादी जी थीं। सम्मान देने के लिए तो बहुत कुछ है, कहने के लिए भी बहुत कुछ है, लेकिन धारणा मूर्त बनने के लिए दादी जी जैसा दृढ़ संकल्प चाहिए। ये बात हम सिर्फ अपने लिए कह रहे हैं। कोई उपदेशक के रूप में ये बात नहीं कही जा रही है। वो शक्तियां अर्जित करने में इतने सालों का अभ्यास दादी जी का था कि वो कुछ नहीं... बहुत कुछ कर गये इस यज्ञ के लिए। तो ऐसे यज्ञ स्नेही, यज्ञ रक्षक दादी को हम कुमारों की ओर से साधुवाद एवं शत् शत् नमन्। हम सभी भी उनकी तरह यज्ञ की सम्भाल करने का संकल्प लेते हैं।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : पति नहीं है, बेटी दो है और बेटी को नौकरी नहीं लग रही, क्या करें?
उत्तर : जो भगवान है, उसे अपना प्रियतम स्वीकार कर लें। और अपनी बेटी की बागडोर उसके हाथ में दे दें। थोड़ा आध्यात्मिक अभ्यास करें, फटाफट नौकरी अच्छी मिल जायेगी।

प्रश्न : राम का जन्म कब हुआ, सतयुग में या त्रेता में? यदि धोबी के कहने पर सीता को वन भेजा गया तो क्या उस समय भी स्त्रियों पर अत्याचार होते थे?
उत्तर : देखिये, ये शास्त्रों की कुछ कहावते हैं। वाल्मीकि जी ने कुछेक सुन्दर कथानक लिखा था, बाद में लोगों ने उसे मनोरंजक बनाने के लिए उसमें बहुत कुछ जोड़ा है। इसीलिए श्रीराम तो त्रेता में ही थे और सीता के साथ तो ये घटनायें हुई ही नहीं क्योंकि सीता तो देवी थी, लक्ष्मी स्वरूपा थी, उसके साथ तो ऐसा हो ही नहीं सकता था। उन्होंने थोड़े ही कुछ पाप किये थे जो उनके साथ ऐसा होता। ये सब गलत बातें रामायण में जोड़ दी गई हैं।

प्रश्न : मैं मैकेनिकल इंजीनियर हूँ। मेरी नौकरी 3-4 मास रहती है और फिर से छूट जाती है। कई बार ऐसा हो चुका है। कृपया बतायें क्या करूँ ?
उत्तर : आपके जीवन में एक विघ्न है। आपको 21 दिन तक विघ्न विनाशक योग भट्ठी कर लेनी चाहिए। दो संकल्प करके... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मैं विघ्न विनाशक हूँ। एक घंटा बहुत अच्छा योग करेंगे। और संकल्प करें कि ये विघ्न हमेशा के लिए समाप्त हो रहे हैं।

प्रश्न : मेरा नाम वीणा है। मुझे डर बहुत लगता है। तो मेरा डर कैसे दूर हो, बताइये।
उत्तर : रोज़ सवेरे उठकर आपको सात बार संकल्प करना है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं निर्भय हूँ। बहुत सच्चे मन से ये अनुभव करें। और साथ-साथ मैं आत्मा हूँ और अजर अमर अविनाशी हूँ। मेरी मृत्यु होती नहीं। ये दो अभ्यास करने से बहुत जल्दी इससे मुक्त हो जायेंगे।

प्रश्न : मेरा नाम विशाल है। मुझे रात को बुरे स्वप्न बहुत आते हैं और जब योग में बैठते हैं तो नींद आती है। कृपया बताइये क्या करें?
उत्तर : आपकी नींद कम्प्लीट नहीं होती। जो स्वप्न भरी नींद होती है वो कम्प्लीट नींद नहीं होती। तो इसीलिए जब योग में बैठेंगे, चित्त शांत होगा तो सो जायेंगे। इसीलिए सोने से पहले अपने सबकॉन्शियस माइंड को ये संकल्प देना है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, इस देह का मालिक हूँ, और आज मुझे बहुत गहरी और स्वप्न रहित नींद आयेगी, ये पाँच बार संकल्प करें। दो चार दिन में ही सब ठीक हो जायेगा।

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम सीमा है। मेरी एक बच्ची है, वो छठी क्लास में पढ़ती है। उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता और रात में बिस्तर भी गीला कर देती है।
उत्तर : आपको दो काम करने हैं, जब वो नींद से जगे तो उससे तीन बार बुलवायेंगे कि मैं बुद्धिमान हूँ, मेरी मेमोरी बहुत सुन्दर है, और ये ब्रेन जो उसके सिस्टम को कन्ट्रोल नहीं कर पा रहा है तो दस मिनट रोज़ उसके ब्रेन को एनर्जी दें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... ऐसे हाथों को आपस में घर्षण कर उसके सर पर हाथ रख दें एक मिनट तक। ऐसा दस बार करेंगे तो उसका यूरिन कन्ट्रोल होने लगेगा।

प्रश्न : मेडिटेशन करके क्या हम एक गाँव से दूसरे गाँव में या एक शहर से दूसरे शहर में अपने अच्छे वायब्रेशन्स या अच्छे संकल्प पहुंचा सकते हैं?
उत्तर : बिल्कुल। एक गाँव से दूसरे गाँव में ही नहीं बल्कि एक गाँव से पूरे विश्व में फैला सकते हैं।

प्रश्न : दस बारह साल से मुझे ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ज्ञान मिला है, परन्तु मेरा पैसा कहीं फँसा हुआ है और आर्थिक स्थिति थोड़ी नाजुक चल रही है, क्या करूं?
उत्तर : रोज़ सवेरे उठकर इस तरह संकल्प करेंगे कि मैं बहुत भाग्यवान हूँ। हे प्रभु! तूने मुझे सबकुछ दिया है। बारम्बार सुख दिया। मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत धनवान हूँ, मैं कर्ज़ से मुक्त हूँ, पाँच बार ये संकल्प करेंगे, धनवान बनते जायेंगे। भाग्य का सितारा चमकता जायेगा और साथ में एक घंटा योग भी करें। पैसा भी वापिस आ जायेगा।

प्रश्न : दो मास से मैं टीवी पर देखकर राजयोग सीख रहा हूँ। बहुत फायदा हुआ है मुझे और मैं 90 प्रतिशत क्रोधमुक्त हो चुका हूँ। मुझे और भी ज़्यादा सीखना है, कृपया बतायें क्या करूं?
उत्तर : बहुत अच्छा... जो इस आधार पर आप 90 प्रतिशत क्रोधमुक्त हो गये। आप बहुत पावरफुल हैं। मैं आपको बधाई देता हूँ। आप योग अभ्यास को जारी रखें और सवेरे के समय को विशेष रूप से सुन्दर संकल्पों में व्यतीत करें तो दिनोदिन आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति भी होती रहेगी।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com